प्रीति सुमन

शोधार्थी- पाटलिपुत्र विश्वविद्यालय, पटना, बिहार

बिहार की समकालीन महिला ग़ज़लकारों की मूल संवेदना

किसी भी युग की संस्कृति और समृद्धि का पता करना हो तो उसके साहित्य को निहारने की आवश्यकता पड़ती है। जिस युग में महिलाएँ पीड़ित, व्यथित और अभिशप्त रही हों, उस युग के साहित्य में उनकी बुलंद आवाज़ सुनायी नहीं देती। आज अपनी सशक्त अभिव्यक्ति के कारण महिलाएँ अपने साथ हो रहे हर अन्याय का हिसाब माँगने लगी हैं। आधी आबादी की भावनाओं को कुचलकर या दरकिनार कर कोई समाज कभी उन्नति नहीं कर सकता। आज बिहार पूर्व की ही तरह साहित्य में अपनी मजबूत स्थिति के लिये चर्चा में है जिसमें महिला लेखिकाओं का भी महत्त्वपूर्ण योगदान है। हिंदी ग़ज़ल महिलाओं को अपनी अभिव्यक्ति की पूरी छूट देती है। बिहार में हिंदी ग़ज़ल में महिला कवयित्रियों की स्थिति बहुत सशक्त है। इस आलेख में बिहार की प्रसिद्ध कवयित्रियों के शेरों को उद्धृत कर उनके लेखन कौशल और विकसित मानसिकता की पड़ताल की गयी है। इन महिला ग़ज़लकारों की अभिव्यक्तियाँ सम्पूर्ण स्त्री समाज का प्रतिनिधित्व करती प्रतीत होती हैं।

उर्दू से जब ग़ज़ल हिंदी में आयी, तब किसी ने सोचा भी नहीं होगा कि जिस ग़ज़ल की उत्पत्ति ही स्त्री सौंदर्य वर्णन और स्त्रियों के विषय में बात कहने के लिये हुई है, वही एक दिन स्त्रियों की भावाभिव्यक्ति का मुख्य माध्यम बन जाएगी। हिंदी ग़ज़ल ने जब उर्दू से हिंदी में प्रवेश किया तब भी महिला कवयित्रियों ने इस पद्धति को पूरी तरह आत्मसात किया और मीराबाई जैसी महान भक्त कवयित्री ने अपनी रचना प्रस्तुति के माध्यम के रूप में ग़ज़ल विधा को चुना। इसी परम्परा को आज भी बिहार की महिला ग़ज़लकारों ने बनाये रखा है। इस विकसित समाज को जानने के लिये यह जानना आवश्यक है कि आज महिलाओं की स्थिति क्या है। वे क्या सोचती हैं, क्या चाहती हैं और विकास में उनका क्या योगदान है? उनकी समझ कितनी विकसित हो चुकी है और आधी आबादी अपना क्या उत्तरदायित्व समझती है? उनके मन के उद्गारों को जानने हेतु महिला ग़ज़लकारों की ग़ज़लों का विस्तृत विवेचन और विश्लेषण आवश्यक है जिसे इस आलेख में प्रस्तुत किया गया है।हिंदी ग़ज़ल का प्रारंभ अमीर ख़ुसरो की उन ग़ज़लों से माना गया है जिनमें किसी भी रूप में हिंदी का प्रयोग किया गया हो। अमीर ख़ुसरों की ग़ज़लों में सिर्फ भाषाई प्रभाव दिखता है लेकिन सही मायने में हिंदी ग़ज़ल की शुरुआत दुष्यंत कुमार से हुई है। असल में ग़ज़ल की मूल संवेदना का गहरा संबंध दुष्यंत कुमार एवं उनकी ग़ज़लों से जुड़ा है।

 ISSN:2583-8849

उनकी ग़ज़लों ने हिंदी ग़ज़ल को नयी दिशा दी और आगे आनेवाले ग़ज़लकारों को ग़ज़ल की उम्दा पृष्ठभूमि। जब दुष्यंत कुमार का पहला ग़ज़ल-संग्रह 'साये में धूप' ग़ज़ल की दुनिया में आया, तो उस संग्रह ने साहित्य की दुनिया में एक क्रांति ला दी। इस संबंध में आलोचक विश्वनाथ त्रिपाठी कहते हैं "हिंदी में शायद दुष्यंत कुमार जैसा कवि और कोई नहीं हुआ, जिसके शेर इतने उदधृत किये जाते हैं। लगभग प्रसिद्ध उर्दू कवियों जितने ही।उन्होंने हिंदी ग़ज़ल को जीवन के साथ जोड़ा और उसे एक नयी पहचान दी। जिस ग़ज़ल को उर्दू में प्रेमिका से वार्तालाप कहा गया उसे हिंदी ग़ज़लकारों ने नया लिबास पहनाकर समाजोपयोगी विधा में तब्दील कर दिया। वरिष्ठ ग़ज़लकार और आलोचक 'ज्ञानप्रकाश विवेक' ने उर्दू ग़ज़ल की हिंदी ग़ज़ल के रूप में होने वाले इस विकास-प्रक्रिया के ऊपर अपने विचार अभिव्यक्त करते हुए कहा है- "जब दुष्यंत ग़ज़ल में प्रविष्ट होते हैं तो जनसाधारण के दुखों, संघर्षों, यातनाओं के साथ प्रविष्ट होते हैं। दुष्यंत की ग़ज़ल में संसार एक नुमाइश है और नुमाइश में जो शख्स मिलता है- वो चिथड़े कपड़ों में है।

दुष्यंत के साथ और उसके बाद तो जैसे हिंदी ग़ज़ल लिखने वालों की एक लंबी फ़ेहरिस्त बन गयी जिसमें महिला ग़ज़लकारों ने भी अपनी भूमिका निभायी। वेदकाल से ही भारतीय साहित्य में महिलाएँ अपनी अहम भूमिका निभाती रही हैं। इस सन्दर्भ में डॉ. आरती कुमारी लिखती हैं "भारतीय साहित्य में स्त्री लेखन की एक लंबी परम्परा रही है। भक्तिकाल से लेकर आधुनिक साहित्य तक में स्त्री लेखन ने हर विधा में अपनी महत्वपूर्ण उपस्थिति दर्ज़ की है।"3 लेकिन समय के साथ जब आज़ादी के इतने वर्ष बीत गये हैं, स्त्रियों की स्थितियों और उसके आसपास की परिस्थितियों में भारी बदलाव आ गया है। अब स्त्रियाँ चारदीवारी के भीतर बंद नहीं रहती। स्त्रियाँ हर एक क्षेत्र में पुरुषों के साथ कन्धा से कन्धा मिलाकर चल रही हैं। अब उनकी समझ घर से निकलकर समाज के बड़े फ़लक तक पहुँच रही है। उन्हें भी पुरुषों के समान सामाजिक समस्याओं का सामना करना पड़ रहा है। रोजमर्रा के इन बेशुमार एहसासों को व्यक्त करने हेतु कवयित्रियों ने ग़ज़ल जैसी सहज और प्रसिद्ध विधा को चुना है। बिहार की प्रसिद्ध कवयित्री डॉ. अनिता सिंह का एक शेर देखिए-

"मेरी पहचान खो गयी मुझसे,
तेरे साँचे में ढल रही हूँ मैं

बिहार में हिंदी ग़ज़ल के प्रणेता जानकीवल्लभ शास्त्री के बाद बिहार की काव्यधारा में भी ग़ज़ल ने एक क्रांति उत्पन्न कर दी। इसमें अनेक महत्वपूर्ण ग़ज़लकारों ने अपना योगदान दिया। इसी क्रम में बिहार ने महिला ग़ज़लकारों की भी एक वृहद् और अच्छी स्थिति प्राप्त की। इन महिला ग़ज़लकारों ने सिर्फ बिहार ही नहीं राष्ट्रीय स्तर पर भी अपनी पहचान बनायी है। इन्होंने ग़ज़ल की समस्त परम्पराओं को ग्रहण कर समकालीन हिंदी ग़ज़ल की कथ्य शैली को अपनाया और उसे समृद्ध किया। स्त्री रचनाकारों ने अपने समस्त भावों एवं जीवन के अनुभवों को पिरोकर सुंदर-सुंदर ग़ज़ल की मालाओं की रचना की है। डॉ. आरती कुमारी अपने आलेख में बिहार की महिला ग़ज़लकारों के विकासात्मक स्थिति पर लिखती हैं-

"इन ग़ज़लों में समसामयिक युगबोध की दृष्टि स्पष्ट झलकती है। जहाँ एक ओर इनमें प्रकृति और पर्यावरण की चिंता विद्यमान है, वहीं दूसरी ओर ये आम आदमी की पीड़ा को रूपायित करती हैं और परिवेशजन्य विद्रूपताओं के प्रति एक प्रश्नचिन्ह सा लगाती हैं।इन महिला रचनाकारों की ग़ज़लों में सिर्फ सामाजिक समस्याओं का ही चित्रण नहीं किया गया बल्कि स्त्रियों के जीवन मूल्यों की तरफ भी ध्यान आकृष्ट किये गये हैं। इसी क्रम में कवयित्री अभिलाषा सिंह का एक शेर देखिए-

"उन्हें भाती है गम को आँसुओं में घोलती औरत
भाती नहीं आख़िरकार उन्हें क्यों बोलती औरत।

महिलाएँ अब पुरानी घिसी-पिटी प्रथाओं का रोना रोते समाज की परवाह करती नहीं दिखती हैं। वे अपनी आज़ादी की लड़ाई लड़ रही हैं और अपना स्थान प्राप्त करने की जद्दोजहद में हैं। अब वे भी आधी आबादी का हक माँगने लगी हैं। इस से सम्बंधित वरिष्ठ कवयित्री डॉ. आरती कुमारी का एक शेर देखिए-
"हार मानेंगी नहीं मुश्किल से डर कर लडकियाँ,
जंग जीतेंगी सदा बनकर सिकंदर लडकियाँ।

महिलाओं ने लंबे समय तक अपने जीवन में समझौता किया जिस कारण उसने घुटन, बेचैनी और बदहाली का दंश सहा। उसे तो अपने दुःख-दर्द बताने तक की भी छूट नहीं प्राप्त थी। आधी आबादी का ऐसा हाल काफी दुखद रहा जिसका प्रभाव आज तक लेखिकाओं के वर्णन में दिखता है। इस हालात को अभिव्यक्ति देती डॉ. नीलम श्रीवास्तव का एक शेर देखें -

"ज़ब्त कर सीने में लाखों हसरतें और ख़्वाहिशें,
कब्र में रस्मों रिवाज़ों की मैं दफनाई गयी।

हिंदी साहित्य में कवयित्रियों की काव्य परम्परा बहुत पुरानी और सशक्त रही है। वर्तमान में तो स्त्री लेखन के स्वर विकास के चरमोत्कर्ष पर हैं। आज महिलाएँ मुखर होकर अपनी समस्याओं, कठिनाइयों और अपने ऊपर हो रहे अत्याचारों पर कलम चला रही हैं। गीत, कविता, दोहा, मुक्तक के साथ-साथ महिलाओं ने ग़ज़ल लेखन में भी अपना हुनर स्थापित किया है। जिस प्रकार महिलाओं की सामाजिक स्थिति में बदलाव आया है उसी प्रकार ग़ज़ल ने भी आज़ादी के साथ परिवर्तित स्वरूप धारण किया है। अब ग़ज़ल में स्त्रियों के मांसल चित्रण का स्थान स्त्री के भाव, उसकी अंतर्वेदना और स्त्री चेतना ने ले लिया है। कवयित्री सदफ़ इक़बाल ने अपने शेर में इसी बात को अभिव्यक्ति देते हुए बताया है कि किस प्रकार महिलाओं की रोजमर्रा की व्यस्तता दिन से होती हुई रात तक पहुँच जाती है-
"लम्बी लम्बी रातें भी दिन में शामिल हो जाती हैं,
काम अधूरा रह जाता है पड़ जाता है छोटा दिन।

महिलाओं के विषय में जबतक पुरुष कहते रहे, क्रांति घटित नहीं हुई। जब महिलाएँ अपनी वेदनाओं को स्वयं व्यक्त करने लगीं, तब उन रचनाओं में जीवन्तता के दर्शन होने लगे। वे बताने लगीं अपनी ख़ूबियों को और संवेदनहीन होते समाज को सीख देने लगीं ममता, करुणा, दया आदि अनेक मानवीय गुणों का। अब समाज को सिर्फ पुरुषों की नज़रों से ही नहीं स्त्री के नज़रिये से भी देखा

जाने लगा। वर्षों की मानसिक गुलामी से बाहर निकलती लड़कियों के मन की ख़ुशी का वर्णन करता हुआ कवयित्री किरण सिंह का यह शेर देखिए-

"तोड़ कर पाँव की बंदिशों की कड़ी।"
साथ मैं धड़कनों के थिरकने लगी।"

महिलाओं ने अब अपनी शर्तों पर अपने जीवन को जीना शुरू कर दिया है। दुनिया की बंदिशें उसे अब बेड़ियों के समान चुभने लगी हैं। वे जीने की आज़ादी को पसंद करने लगी हैं। गृहिणी स्त्रियों के रोजमर्रा की कश्मकश को अपने शेर में अभिव्यक्ति देती सौम्य सलोनी 'हीर' का एक शेर प्रस्तुत है-

"रहती हैं हर वक़्त घर में औरतें,
रहती हैं फिर भी सफ़र में औरतें।

महिला ग़ज़लकारों ने सामाजिक, राजनीतिक मुद्दों पर भी ध्यान आकृष्ट किया और हिंदी ग़ज़ल के द्वारा सामाजिक चिंतन को भरपूर महत्त्व दिया। सच्चाई का रास्ता हमेशा से कठिन और दुरूह रहा है। यही कारण है कि कमजोर लोगों ने आसान रास्ता चुनना ही बेहतर समझा। जिस कारण भ्रष्टाचार, लोभ, आलसपन, मतलबीपन आदि दुर्गुणों को बढ़ावा मिला। सामाजिक चिंतन से जुड़ा डॉ. भावना का एक शेर देखिए -

"शरीफ़ो का यहाँ हो काम कैसे,
सभी टेबुल पर रिश्वत बोलती है।

जीवन के अनुभवों का दस्तावेज होता है साहित्य। आधुनिक काल में बदलाव का यह दुष्परिणाम हुआ है कि संयुक्त परिवार टूटने और पारिवारिक ढाँचे अब चरमराने लगे हैं। पिता और पुत्र के बीच बदलती भूमिका की ख़बर देता कवयित्री दीपशिखा का यह भावप्रवण शेर देखिए-

"जिनको होना था लाठी बुढ़ापे की पर,
लठ पिता के ही ऊपर चलाने लगे।"

समाज के बदलाव और उसके गिरते मानसिक स्तर का उदाहरण है यह शेर। लोगों ने अपने व्यक्तिगत लोभ में पड़कर पूरे समाज, प्रकृति, पर्यावरण और सम्पूर्ण संरचना को खतरे में डाल दिया है। इस बदलाव के कारण उत्पन्न पर्यावरणीय चिंता को बिहार की प्रतिष्ठित ग़ज़लकार डॉ. भावना अपने इस शेर में व्यक्त करती हैं-

"गुज़ारिश है हवा तुमसे घटाओं को बुला लाओ,
मेरी बिटिया बड़ी उम्मीद से पौधे लगाती है।"

इन महिला ग़ज़लकारों ने सिर्फ पर्यावरणीय चिंतन ही नहीं किया बल्कि ग़ज़लों में प्राकृतिक सौंदर्य का भी सुरुचिपूर्ण वर्णन किया है। इससे सम्बंधित डॉ. नूतन सिंह का एक प्रसिद्ध शेर देखें-

"बादलों की जो चादर सरकने लगी,
धूप बिस्तर पे कुछ गुनगुनी आ गयी।"

प्रेम के चित्रण में प्रकृति का अवलम्बन आदिकाल से ही काव्य में देखा जाता रहा है जिसका पालन आज की ग़ज़लों में भी किया जा रहा है। प्रकृति से सम्बंधित प्रतीकों और बिम्बों के प्रयोग ने हिंदी ग़ज़ल को इतना सरल और आमजन में लोकप्रिय बनाया है। बादल, मौसम, चाँद, चाँदनी, धूप, शबनम आदि अनेक महत्त्वपूर्ण प्राकृतिक प्रतीक ग़ज़ल में प्रयोग किये जाते हैं। उदाहरणस्वरूप पद्मश्री स्वर्गीय डॉ. शांति जैन का एक शेर देखें-

"बादल ने चाँदनी का बदन इस तरह छुआ,
फूलों के लब पे जैसे कि शबनम फिसल पड़े।"

महिला सशक्तीकरण सम्बंधित अनेक भावों की अभिव्यक्ति के बावजूद स्त्रियों के मूल भाव 'शृंगार' इन महिला ग़ज़लकारों की ग़ज़लों में दृष्टिगत होते हैं। प्रेम, दया, करुणा, ममता आदि अनेक आत्मिक सौंदर्य से परिपूर्ण स्त्रियाँ, जीवन के गीत के साथ-साथ इन ग़ज़लों में प्रणय के गीत भी गा रही हैं। इनमें स्त्री मन के उदात्त प्रेम का भावपूर्ण वर्णन मिलता है। प्यार, मनुहार, निमंत्रण, बेकरारी जैसे भावों से सम्बंधित शेर वरिष्ठ कवयित्री आराधना प्रसाद की एक ग़ज़ल में दृष्टिगत होता है, शेर द्रष्टव्य है-

"तुमने गर प्यार से इनकार किया जानेमन,
दिल के अरमान हमारे तो सभी जायेंगे|"

ज़िन्दगी में प्यार का बहुत महत्वपूर्ण स्थान है जिसके बगैर ज़िन्दगी को ख़ूबसूरत नहीं माना जा सकता। नारी प्रेम की प्रतिमूर्ति होती हैं और अपने प्रियतम से मिलन का स्वप्न उसके प्रणय का अंतिम ध्येय होता है। हिंदी ग़ज़ल में महिलाओं ने इस भाव को बड़ी ख़ूबसूरती से उकेरा है। कवयित्री ज़ीनत शेख़ का यह प्रिय मिलन के प्रति असीम आग्रह वाला शेर देखिए-

"तुम को पाने के लिए सात जनम लेना है,
एक दो पल नहीं सदियों के बराबर तुम हो।"

इन ग़ज़लों में सिर्फ स्त्री सौंदर्य, मानव प्रेम का ही चित्रण नहीं मिलता है वरन देशभक्ति के भाव भी कूट-कूट कर भरे हुए हैं। देशप्रेम हमारे ह्रदय में बसे वो भाव हैं जिनके बगैर हमारा अस्तित्व नहीं है। स्त्रियों के लिये पति प्रेम, बच्चों से प्रेम एवं परिवार से प्रेम के भाव प्रमुख होते हैं।

निष्कर्ष-

किसी विधा को समृद्ध करने में महिला और पुरुष दोनों रचनाकारों की महत्त्वपूर्ण भूमिका होती है। हिंदी ग़ज़ल की आज जो बेहतर स्थिति बनी है उसमें महिला ग़ज़लकारों का भी बड़ा योगदान है। इसी क्रम में बिहार की महिला ग़ज़लकारों की बात करें तो उन्होंने भी जीवन के अनेक जाने-अनजाने रंगों को अपनी ग़ज़लों में अभिव्यक्ति दी है। भुखमरी, आधुनिकता, भौतिकवाद, बेरोजगारी, महँगाई, महिला सशक्तीकरण आदि ऐसे अनेक विषय हैं जिन्हें महिला ग़ज़लकारों ने अपने शेर के माध्यम से व्यक्त किया है। अनेक महत्वपूर्ण सामाजिक मुद्दों के साथ-साथ इनकी ग़ज़लों में शृंगार-रस से सम्बंधित ग़ज़लों की भी प्रधानता दृष्टिगत होती है। चूँकि महिलाओं की स्थिति में पहले की अपेक्षा बहुत बड़े और विशिष्ट बदलाव हुए हैं इसलिए उनके ज्यादातर मुद्दे महिलाओं की जीवन शैली, भावनाओं और उनकी चुनौतियों से संबंधित हैं। कुछ भाव बिल्कुल नवीन हैं तो कुछ पुरुष रचनाकारों से बिल्कुल इतर हैं। समकालीन महिला ग़ज़लकारों ने हिंदी ग़ज़ल की एक नयी इबारत लिखनी शुरू कर दी है जो आगे चलकर हिंदी ग़ज़ल में मील का पत्थर साबित होगी।

धरोहर

जॉन एलिया

जो गुज़ारी न जा सकी हम से
हम ने वो ज़िंदगी गुज़ारी है

ISSN:2583-8849